Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/04/2020 Accepted on : 19/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

जनजातीय सांस्कृतिक परिवर्तन एवं संचार माध्यम : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 'उत्तराखण्ड की थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में'

डॉ. रवि कान्त कुमार
पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च स्कॉलर, (ICSSR नई दिल्ली) राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड
E-Mail : ravikant8510@gmail.com

सारांश : संस्कृति किसी समाज या समुदाय की विशिष्ट पहचान होती है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसे मनुष्य अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विकसित करता है। प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक मैलीनोवस्की ने संस्कृति शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है ''संस्कृति विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने की एक व्यवस्था तथा उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं की एक संगठित व्यवस्था है।'' यह व्यवस्था स्थान एवं समय के साथ कुछ मायने में समानता एवं विभिन्नता को समेटे प्रत्येक समाज एवं समुदाय में सार्वकालिक रूप से मौजूद रही है। यही कारण है कि बदलती सामाजिक आवश्यकताओं, तकनीकी विकास तथा अन्य कारकों के प्रभाव स्वरूप सामाजिक संरचना के अन्य क्षेत्रों के समान ही सांस्कृतिक व्यवस्था में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। परिवर्तन की इस स्वभाविक प्रक्रिया तथा इसकी गति को प्रभावित करने वाली मानवीय क्रियाओं का प्रभाव अन्य समूदाय के समान ही थारू जनजाति की संस्कृति पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

साम्प्रतिक संदर्भ में किसी समाज या समुदाय की संस्कृति को प्रभावित करने वाले विविध कारकों में संचार माध्यमों का अपना विशिष्ट महत्व है। संचार क्रांति के पश्चात संचार माध्यमों के क्षेत्र में आयी अकल्पनीय बदलावों ने समाज को एक छत के नीचे खड़ा करने का कार्य किया है। इसी कारण आज 'भूमंडलीय सूचना समाज' की संकल्पना साकार रूप ले रही है। इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया ने आज सूचना सम्प्रेषण को जिस दिशा में मोड़ने का कार्य किया है, उसने समाज को और खास कर समाज के युवाओं को विशेष रूप में प्रभावित किया। आज युवाओं में परसंस्कृतिग्रहण की लोकप्रियता तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव ने उसे सामाजिक एवं असामाजिक कार्यों में संलिप्त करने का कार्य किया, जिसका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव राष्ट्रीय विकास पर पड़ता है।

जनजातीय समाज आज भी अपनी पारंपरिक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए जाने जाते है तथा यही उसे आधुनिक समाज से अलग एक विशिष्ट पहचान दिलाती है। क्योंकि भारतीय समाज विविध संस्कृतियों एवं समुदायों का एक अजायबघर है, यही कारण है कि यहां की संस्कृति का अध्ययन समग्र रूप में करना एक जटिल कार्य है। विषय की इन्हीं जटिलता के कारण इसका अध्ययन एक समाज को केन्द्र में रखकर छोटे–छोटे भौगोलिक परिवेश में किया जाना अपरिहार्य है। विषय के इन्हीं महत्व के कारण प्रस्तुत शोध पत्र हेतु उत्तराखण्ड में निवासरत प्रमुख जनजाति थारू का चयन किया गया है। इस शोध पत्र में इस बात पर विशेष प्रकाश डाला जाएगा कि संचार माध्यमों के बदलते स्वरूप के साथ इस समाज की संस्कृति में क्या परिवर्तन आया है और यह राष्ट्रीयता को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है।

शब्द कुंजी : संस्कृति, संचार–क्रांति, उपभोक्तावादी संस्कृति, जनजाति, थारू, परंपराएं, आजीविका, युवा श्रम शक्ति, औद्योगीकरण, निजीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण वैश्वीकरण, उदारीकरण, परसंस्कृतिग्रहण, संरक्षण एवं संवर्द्धन।

१ प्रस्तावना :

समकालीन समाज तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों के साथ–साथ सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से देखे जा रहे हैं। संस्कृति किसी समाज या समुदाय की विशिष्ट पहचान होती है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसे मनुष्य अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विकसित करता है। प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक मैलीनोवस्की ने संस्कृति शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है ''संस्कृति विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने की एक व्यवस्था तथा उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं की एक

संगठित व्यवस्था है।'' इसी शब्द को स्पष्ट करते हुए हाबेल ने लिखा है ''संस्कृति सीखे हुए एकीकृत व्यवहार प्रतिमानों का सम्पूर्ण योग है जो किसी समाज के सदस्यों की विशेषताओं को इंगित करती है। यह जैविक विरासत का परिणाम नहीं होते हैं।'' इससे यह स्पष्ट होता है कि संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा उसके व्यवहारों के नियमन के लिए समाज द्वारा प्रयुक्त सामाजिक व्यवहार एवं क्रियाकलाप है। कूले आर्गल एवं कार्र ने संस्कृति शब्द के बारे में लिखा है कि ''संस्कृति कृत्रिम वस्तुओं, दशाओं, यन्त्रों, प्रविधियों, विचारों, प्रतीकों एवं व्यवहार प्रतिमानों का सम्पूर्ण संग्रह है जो किसी मानव समूह की सम्पत्ति होते हैं, जिसमें कुछ स्थिरता पायी जाती है तथा जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किए जाने योग्य है।'' संस्कृति संबंधित इन सभी परिभाषाओं से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि संस्कृति किसी समाज या समुदाय में रहन–सहन के तौर तरीके, आजीविका से जुड़े साधन एवं तरीके, क्रियाकलाप, मानवीय व्यवहार के तरीके, परंपराएं, मान्यताएं, संस्कार, खान–पान, पोशाक से संबंधित है। यह किसी भी समाज में निवास करने वाले मानव समुदाय का आईना होता है, जो उसके जीवन शैली एवं मनोवृति को स्पष्ट रूप से दिखाता है। परंपरा से यह न केवल मानवीय व्यवहार को नियंत्रित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है बल्कि सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास की दिशा को निर्धारित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि किसी भी राष्ट्र के विकास की दिशा वहां के युवा श्रम शक्ति एवं उनके नैतिक कर्तव्य परायणता की सार्थक दिशा पर निर्भर करती है।

समय के साथ समाज की बदलती मानवीय आवश्यकताओं ने औद्योगीकरण, निजीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण वैश्वीकरण, उदारीकरण, संचार क्रांति आदि संकल्पनाओं को जन्म दिया है। इस संकल्पना के कारण प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में परिवर्तन की दर प्रभावित होती रही 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना का साकार होना तथा परिवर्तन के बदलते स्वरूप का ही परिणाम है। परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो स्थान एवं समय के साथ कुछ मायने में समानता एवं विभिन्नता को समेटे प्रत्येक समाज एवं समुदाय में सार्वकालिक रूप से मौजूद रही है। यही कारण है कि बदलती सामाजिक आवश्यकताओं, तकनीकी विकास तथा अन्य कारकों के प्रभाव स्वरूप सामाजिक संरचना के अन्य क्षेत्रों के समान ही आज जनजातीय सांस्कृतिक व्यवस्था में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। इस प्रकार के परिवर्तन की दिशा को किसी एक क्षेत्र विशेष से जोड़ना या उसे किसी एक विशेष दायरे में बांधना संभव प्रतीत नहीं होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने जनजातीय समाज को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित करने का कार्य किया है। बावजूद इसके यदि आज के दौर में देखे जायें तो जनजातीय सांस्कृतिक परिवर्तन को बढ़ावा देने वाले विभिन्न कारकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका बदलते संचार माध्यमों की रही है। संचार क्रांति के पश्चात संचार माध्यमों के क्षेत्र में आयी अकल्पनीय बदलावों ने समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य किया है। इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया ने आज सूचना सम्प्रेषण को जिस दिशा में मोड़ने का कार्य किया है, उसने समाज को और खास कर समाज के युवाओं को विशेष रूप में प्रभावित किया। आज ग्रामीण एवं दूर दराज के क्षेत्रों में निवासरत युवाओं में परसंस्कृतिग्रहण की लोकप्रियता तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव का मुख्य कारण आधुनिक संचार माध्यम ही है। इससे देश एवं समाज का भविष्य युवा वर्ग प्रभावित होकर सामाजिक एवं असामाजिक कार्यों में संलिप्त हो रहे हैं। जिसका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव राष्ट्रीय विकास पर पड़ता है।

जनजातीय समुदाय का तात्पर्य उस समुदाय से है, जो आम तौर पर सभ्य समाजों से दूर प्रकृति की गोद में अपना निवास स्थान बनाए हुए हैं। सभ्य समाजों से दूर वनों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में तथा तराई–भावर के क्षेत्रों में निवास करने के कारण यह समुदाय वर्षों तक अपनी संस्कृति के संरक्षण में सफल रही है। क्योंकि कुछ वर्ष पूर्व तक संचार माध्यमों का इतना बड़ा जाल अकल्पनीय था तथा दूसरी ओर सड़क एवं यातायात व्यवस्था भी इतनी नहीं थी, जिस कारण न तो इनकी संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से अन्य संस्कृति से ज्यादा प्रभावित होती थी न ही अप्रत्यक्ष रूप से। यही कारण है कि इस समुदाय की संस्कृति, रहन–सहन के तरीके एवं जीवन –शैली आज भी बहुत हद तक पारंपरिक है, लेकिन विगत कुछ दशकों में इनमें भी परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। खास कर उन जनजातीय समुदायों में जो सभ्य समाजों के आस–पास निवास करते हैं। इसका एक बड़ा कारण है – सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा इन जातियों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास करना तथा समाज में आर्थिक प्रस्थिति का बढ़ता महत्व। इस प्रयास में संचार के आधुनिक माध्यमों का अपना विशेष स्थान है। संचार साधनों ने न केवल औद्योगिक एवं नगरीय समाज बल्कि ग्रामीण एवं जनजातीय समाज को भी विकास के आधारभूत कारकों से अवगत कराने तथा उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर आकर्षित करने का कार्य किया है। इसके परिणामस्वरूप इनकी संस्कृति एवं सभ्यता में परिवर्तन परिलक्षित होने लगे हैं। जनजातीय समाज में हो रहे इस प्रकार के परिवर्तन के कारण ही प्रस्तुत शोध पत्र हेतु जनजातीय सांस्कृतिक परिवर्तन एवं संचार माध्यम : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 'उत्तराखण्ड की थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में' शीर्षक विषय का चयन किया है।

थारू जनजाति उत्तराखण्ड की एक प्रमुख जनजाति है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में कोई प्रमाणिक तथ्य उपलब्ध नहीं है, इसके संबंध में अलग–अलग विद्वानों के मत अलग–अलग है। कुछ विद्वानों का मानना है कि थारू पहले 'तारू' के नाम से जाना जाता था जो आगे चलकर 'थारू' नाम में बदल गया। कुछ अन्य विद्वानों का यह भी मानना है कि थारू शब्द का अर्थ जनजातीय भाषा में जंगल होता है, क्योंकि ये समुदाय सदियों तक घने जंगलों में निवास करते थे इसलिए इसे थारू नाम दिया गया। इसकी उत्पत्ति के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान एवं मानवशास्त्री इसे राजपूत वंश का मानते हैं जबकि कुछ विद्वान इसे इनकी शारीरिक लक्षणों के आधार पर इसे मंगोल प्रजाति का मानते हैं। अपनी उत्पत्ति के संबंध में थारू समुदाय के लोगों का मानना है कि वे राणा प्रताप के वंशज हैं, जो मुगलों के दमन नीति के कारण अपने कुछ सेवकों के साथ उनसे छिपते हुए जंगल में आ बसे और कालांतर में इनकी ही संतानें थारू कहलाई। इस प्रकार हम देखते हैं कि थारू जनजाति की उत्पत्ति के संदर्भ में विचारकों का एक मत नहीं है, लेकिन जो तथ्य सामने है उनके आधार पर थारूओं की राजपूत वंश से जुड़े होने के सिद्धांत अधिक प्रमाणिक प्रतीत होते हैं।

समाज के बुजुर्गों का मानना है कि इस समुदाय की स्त्रियां राजघराने से संबंधित थी। यही कारण है कि इस समुदाय के स्त्रियों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत उच्च मानी जाती है। इस धारणा की पुष्टि आज भी इस समुदाय के सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में स्त्रियों की उच्च प्रस्थिति से होती है। जीवन साथी के चुनाव एवं तलाक में स्त्रियों का प्रभुत्व, घर से बाहर बाजारों, मेलों, उत्सवों व त्यौहारों में स्त्रियों की स्वच्छंद सहभागिता इस समुदाय की विशिष्ट संस्कृति की परिचायक है।

संचार माध्यम के विकास ने आज एक ओर जहां मानव जीवन एवं राष्ट्रीय विकास को एक नई दिशा देने का कार्य किया वहीं उसके समक्ष नित्य नयी चुनौतियां भी खड़ी की। आधुनिक संचार माध्यम यथा रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, मोबाईल, कम्प्यूटर और इंटरनेट ने वैश्विक दूरियों को कम किया है। आज श्रम से लेकर मनोरंजन तक हर क्षेत्र में आधुनिक संचार माध्यम की भूमिका बढ़ती जा रही है। सोशल मीडिया, मैसेंजर, कॉन्फ्रेंस, वर्चुअल क्लास सिस्टम के बढ़ते प्रयोग ने एक ओर तो सामाजिक संबंधों में औपचारिकता को बढ़ावा दिया है तो दूसरी ओर कुछ ऐसे लोगों से मेल–जोल बढ़ाने का अवसर भी दिया है, जिनके बारे में कल्पना करना भी संभव नहीं था। आज इस प्रकार के संचार माध्यम ने नगरीय समाज के साथ–साथ ग्रामीण एवं जनजातीय समाज को भी अपने जद में ले लिया है, जिसका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव उस समाज में रहने वाले लोगों की प्रस्थिति से जुड़ जाता है।

वर्तमान समय में जनजातीय संस्कृति की विशिष्टता प्रायः लुप्त होती जा रही है। पूर्व में औद्योगीकरण आधुनीकीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण एवं संचार क्रांति आदि के विकास ने ग्रामीण संस्कृति के साथ–साथ जनजातीय संस्कृति को भी प्रभावित किया है। यही कारण है कि जनजातीय समुदाय धीरे–धीरे अपनी पारंपरिक विशिष्टता के स्थान पर संस्कृति के कुछ लक्ष्यों को आत्मसात करने लगे हैं। वर्तमान समय में जबकि समस्त विश्व वैश्वीकरण एवं संचार क्रांति के प्रभाव में है, यह जनजातीय समाज भी इससे अछूता नहीं रहा है। यद्यपि सामाजिक सम्पर्क की सीमा के आधार पर प्रत्येक जनजाति में इसके प्रभाव अलग–अलग देखे जाते हैं।

२ अध्ययन की प्रासंगिकता एवं उद्देश्य :

जनजातीय समाज आज भी अपनी पारंपरिक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए जाने जाते है तथा यही उसे आधुनिक समाज से अलग एक विशिष्ट पहचान दिलाती है। क्योंकि भारतीय समाज विविध संस्कृतियों एवं समुदायों का एक अजायबघर है, यही कारण है कि यहां की संस्कृति का अध्ययन समग्र रूप में करना एक जटिल कार्य है। विषय की इन्हीं जटिलता के कारण इसका अध्ययन एक समाज को केन्द्र में रखकर छोटे–छोटे भौगोलिक परिवेश में किया जाना अपरिहार्य है। प्रस्तुत अध्ययन थारू जनजाति पर केन्द्रित होने का यही एक प्रमुख कारण है। इस शोध पत्र में इस बात पर विशेष प्रकाश डाला जाएगा कि संचार माध्यमों के बदलते स्वरूप के साथ इस समाज की संस्कृति में क्या परिवर्तन आया है और यह राष्ट्रीयता को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है। इस प्रकार यह शोध पत्र न केवल हमें यह जानने में मददगार साबित होती है कि युवाओं की सांस्कृतिक दिशा क्या है बल्कि इससे उसे किस प्रकार सामाजिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जाए का भी पता चलता है।

उत्तराखण्ड में थारू जनजाति मूल रूप से तराई के क्षेत्रों में निवास करती है। यह क्षेत्र मूल रूप से सभ्य समाजों के निकट है। इसलिए वैसी अन्य जनजातीय समुदायों जो सभ्य समाजों से दूर घने जंगलों एवं अन्य दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करती है, से आसानी से विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। बावजूद इसके आज भी यह समुदाय पिछड़ी अवस्था में जिन्दगी गुजारने को विवश है। साथ ही सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्द्धन के मामले में सभ्य समाजों के निकट होने के कारण आज के इस संचार क्रांति के दौर में इसे सर्वाधिक संक्रमण का सामना करना

पड़ रहा है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. थारू जनजाति की सांस्कृतिक विरासत से अवगत होना।
2. थारू जनजाति की बदलती सांस्कृति में संचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन करना।
3. थारू जनजाति की बदलती संस्कृति का क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करना।
4. बदलते संचार माध्यम का थारू जनजाति के युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

३ अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन कार्य उत्तराखण्ड के जनपद उधम सिंह नगर में निवासरत थारू जनजाति पर केन्द्रित है। यह जनजाति मूल रूप से उत्तराखण्ड के जनपद उधम सिंह नगर के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के कुछ जनपदों, बिहार के नेपाल से सटे एवं उनके नजदीकी जनपदों तथा नेपाल में निवास करती है। इस अध्ययन कार्य हेतु जनपद उधम सिंह नगर के चयन का कारण प्रदेश की अन्य क्षेत्रों से भिन्न भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सामुदायिक परिस्थितियों का होना है।

उत्तराखण्ड भारत का पर्वतीय राज्य है। इस प्रदेश की कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 88 प्रतिशत भाग पर्वतीय है। जहां की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता हमेशा से आकर्षण का केन्द्र रही है। यहां की प्राकृतिक सौन्दर्य एवं धार्मिक स्थल पर्यटन का केन्द्र बिन्दु रहा है। एक स्वतंत्र प्रदेश के रूप में अस्तित्व में आने से पूर्व यहां की अर्थव्यवस्था 'मनीऑर्डर अर्थव्यवस्था' के रूप में जानी जाती थी। लेकिन दो दशकों में इसकी तस्वीर बहुत हद बदलने में सफलता मिली है। सिडकुल की स्थापना करने तथा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयास ने प्रदेश में रोजगार की अपार संभावनाएं सृजित की है। इस कारण न केवल प्रदेश के युवा आज इसमें कार्य कर रहे हैं बल्कि अन्य प्रदेश के युवा भी यहां रोजगार एवं शिक्षा के लिए आ रहे हैं। प्रदेश के अंदर आयी इस प्रकार के बदलाव ने न केवल आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र को प्रभावित करने का कार्य किया है बल्कि सांस्कृतिक संक्रमण की स्थिति को भी बढ़ावा दिया है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। बदलते समय के साथ किसी भी समाज या समुदाय की सामाजिक – सांस्कृतिक अवस्था में परिवर्तन होना स्वभाविक है, बावजूद इसके वर्षों तक प्रदेश की संस्कृति में व्यापक स्तर पर बदलाव परिलक्षित नहीं होता हें। यही कारण है कि आज भी प्रदेश की संस्कृति में प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिलती है।

४ अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के समकालीन महत्व एवं इनकी प्रासंगिकता को देखते हुए इनके अध्ययन पद्धति का निर्धारण किया गया है। इस क्रम में सर्वप्रथम प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का निर्धारण किया गया तथा इस अध्ययन कार्य हेतु आवश्यक तथ्यों के संकलन के लिए अध्ययन क्षेत्र के रूप में जनपद उधम सिंह नगर का निर्धारण किया गया है। इसके पश्चात अध्ययन समग्र के रूप में इन अध्ययन क्षेत्र के विकास खण्ड सितारगंज का चयन किया गया है। क्योंकि इस जनपद में थारू जनजाति का निवास स्थान मुख्य रूप से खटीमा एवं सितारगंज है। विकासखण्ड सितारगंज प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र सिडकुल के निकट है, यही कारण है कि इस क्षेत्र में निवासरत जनजातीय समुदाय पर संचार माध्यम का प्रभाव अधिक मिलने की संभावना है। इन चयनित अध्ययन समग्र में से सोद्देश्य निदर्शन पद्धति के द्वारा पांच गॉव का चयन किया गया है तत्पश्चात इस गॉव में निवासरत समस्त थारू परिवारों में से 100 थारू परिवारों का चयन सोद्देश्य निदर्शन पद्धति के द्वारा उत्तरदाता के रूप में किया गया है। इन चयनित उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों तथा अन्य स्रोत से प्राप्त द्वितीयक तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण कर उसके आधार पर निष्कर्ष का आलेखन किया गया है।

५ तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :

किसी भी शोध पत्र का महत्वपूर्ण भाग उसके तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण होता है। तथ्यों का क्रमबद्ध वर्गीकरण और विश्लेषण ही निष्कर्ष की सत्यता को विश्वस्नीय बनाने का कार्य करती है। सूचना क्रांति ने संवाद के साथ–साथ नये–नये तकनीक को वैश्विक स्तर पर सरलता पूर्वक पहुचाने का कार्य किया है। जिससे हर समुदाय को समयानुसार तत्कालीन जरूरतों के अनुसार विकास की दिशा में अग्रसर होने का अवसर मिला है। विभिन्न गतिविधियों

से अनभिग्य विकास की धारा से दूर रह रहे विभिन्न जनजातियों को सूचना तंत्र ने जोड़ने का कार्य किया है। जिससे उनके रहन–सहन के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं आर्थिक वातावरण में भी तीव्र परिवर्तन हो रहा है। आज राष्ट्र की विकास में जनजातीय समुदाय की भूमिका को नजरांदाज नहीं किया जा सकता है।

किसी भी समुदाय के विकास में और खास कर उस समुदाय के युवाओं के विकास में उसकी शैक्षिक स्थिति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यही कारण है कि आज राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी भेदभाव के सभी समुदाय शैक्षिक विकास के लिए प्रयासरत है। इसका असर न केवल उसके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में सुधार में दिखता है बल्कि उसके महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्य वैवाहिक स्थिति पर भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि बदलते शैक्षिक स्थिति के साथ क्या वैवाहिक सांस्कृतिक प्रणालियों में बदलाव परिलक्षित होता है? इस संदर्भ में प्राप्त ऑकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण सारणी संख्या 01 में किया गया है –

सारणी संख्या 01

प्रश्न बदलते शैक्षिक स्थिति के साथ क्या वैवाहिक सांस्कृतिक प्रणालियों में बदलाव परिलक्षित होता है? के प्रति

उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हां	92	92
नहीं	04	04
तटस्थ	04	04
कुल	100	100

चार्ट संख्या 01

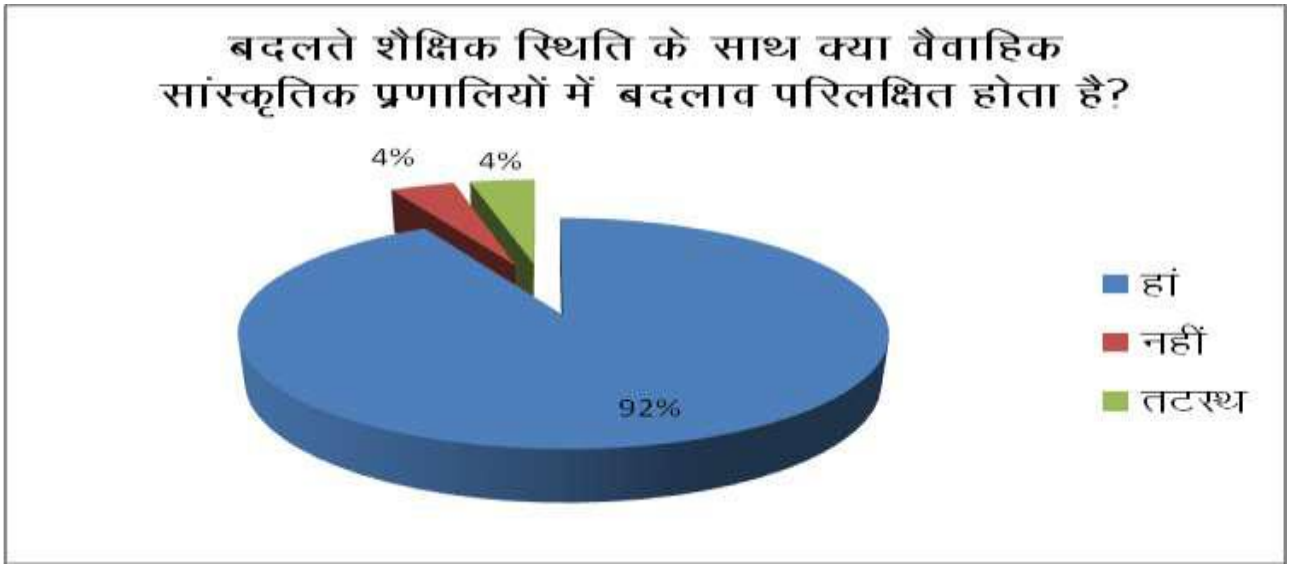

सारणी संख्या 01 के वर्गीकरण से स्पष्ट है कि संबंधित समुदाय के 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि बदलते समय एवं शैक्षिक योग्यता के अनुसार उस समाज के पारंपरिक वैवाहिक प्रणालियों में परिवर्तन आ रहा है। मात्र 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रकार के परिवर्तन से इंकार किया है। अवलोकन एवं संबंधित लोगों से बातचीत के अनुभव के आधार पर यह भी पता चला कि इस प्रकार के परिवर्तन में सोशल मीडिया एवं टीवी का विशेष महत्व है। यह आज न केवल नगरीय समुदाय की संस्कृति की ओर आकर्षित करती है बल्कि उसके पुर्नसमाजीकरण का काम भी करता है, जो उसकी पारंपरिक जीवन शैली से बिल्कुल भिन्न होती है।

संचार मानव जीवन का आधार है। यह मानवीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक ज्ञान के संरक्षण एवं संवर्द्धन के आवश्यक साधन है। यही वह साधन है जो किसी समाज को समयानुकूल बनाये रखने के लिए आवश्यक सुधार की दिशा में भी समाज को बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास को समाप्त करने की बात हो या उसके संरक्षण के लिए सामाजिक एवं सामुदायिक एकता की बात हो संचार माध्यम की महती भूमिका रही है। इसके बढ़ते महत्व के कारण ही आज ग्रामीण एवं दूर दराज के समाजों में जागरूकता फैलाने के लिए इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट का जाल फैलाने की योजना तथा

डिजीटल इंडिया जैसी महत्वाकांक्षी योजना इसी दिशा में बढ़ते कदम का उदाहरण है। यह कदम न केवल किसी खास समुदाय के विकास की दिशा में कारगर कदम है बल्कि साम्प्रतिक संदर्भ में राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है। आज संचार के बढ़ते प्रभाव ने सूचना समाज जैसी संकल्पना को साकार रूप प्रदान किया है। इस प्रकार की स्थिति न केवल बाजारवाद एवं उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दिया है बल्कि इसने विश्व संस्कृति को तथा ग्रामीण एवं जनजातीय संस्कृति को प्रभावित करने का कार्य किया है। आज इन क्षेत्रों में बढ़ती संस्कृतीकरण की प्रक्रिया इसी प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संचार साधनों के सामाजिक, शैक्षिक, जागरूकता, व्यवसायिक एवं परसंस्कृति के प्रसार के क्षेत्र में बढ़ते कदम के साथ–साथ मनोरंजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्वीकरण की अवधारणा के बाद से इस क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव आ गया है। राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तरों पर चैनलों की बढ़ती संख्या तथा मनोरंजक कार्यक्रमों के क्षेत्र में आयी अकल्पनीय बाढ़ ने जनमानस के समक्ष मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन प्रस्तुत करने का कार्य किया है। आज शायद ही कोई ऐसा परिवार मिलता है जिसके घर में टेलीविजन या रेडियों एवं मोबाईल की पहुंच सुनिश्चित न हुई हो। आज बच्चा हो या युवा या फिर वृद्ध सभी के लिए अलग–अलग कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम ने भी समाज को प्रभावित करने का कार्य किया है। संचार माध्यमों के इसी महत्व के कारण प्रस्तुत अध्ययन के दौरान यह जानने का प्रयास किया कि इसके प्रति उत्तरदाता क्या सोचते हैं। इस संदर्भ में संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं सारणीयन सारणी संख्या 02 में किया गया है –

सारणी संख्या 02

उत्तरदाताओं की संचार माध्यमों के प्रति मनोवृति

मनोवृति	उत्तरदाता	प्रतिशत
सामाजिक जागरूकता एवं राष्ट्रीय विकास में सहायक	62	62
उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देने में सहायक	13	13
संस्कृतिकरण को बढ़ावा देने में सहायक	15	15
मनोरंजन का साधन	10	10
कुल	100	100

चार्ट संख्या 02

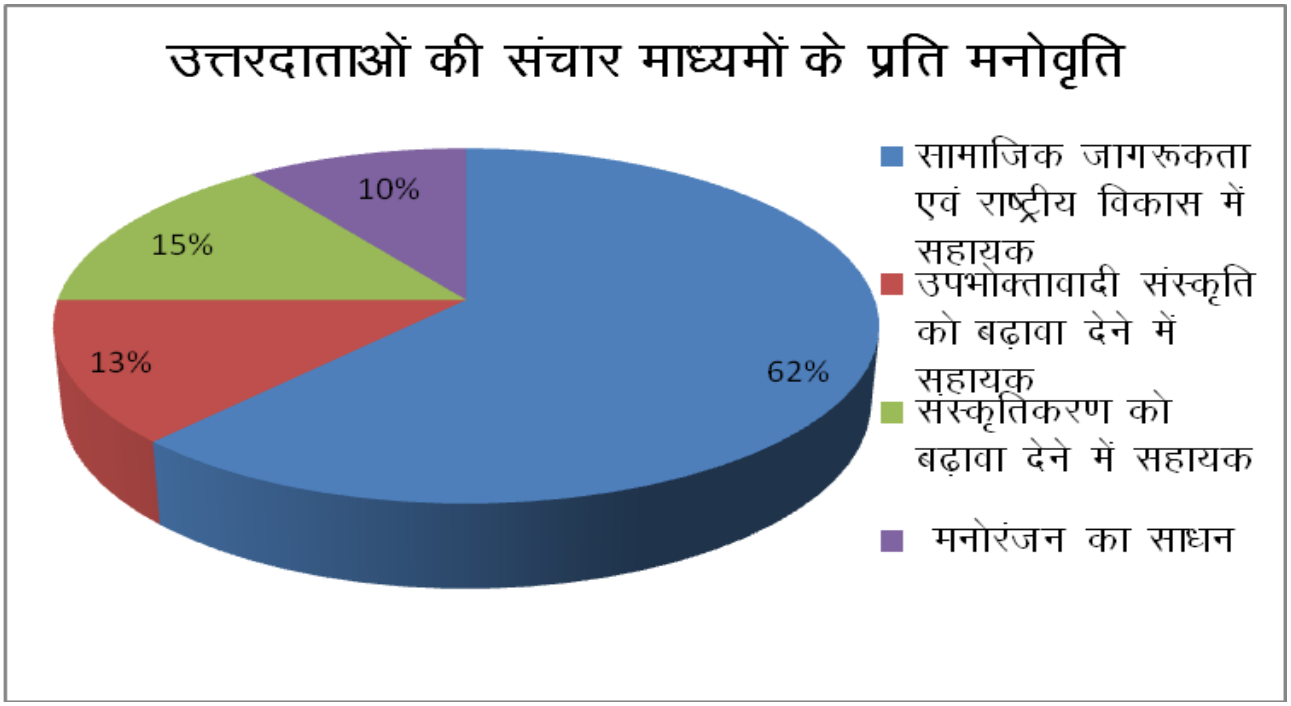

सारणी संख्या 02 में वर्गीकृत तथ्यों के वर्गीकरण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि समकालीन समय में संचार माध्यम सामाजिक जागरूकता एवं राष्ट्रीय विकास में सहायक साबित हो रहे हैं। जबकि महज 10 प्रतिशत लोग इसे केवल मनोरंजन के साधनों के रूप में देखते हैं। संस्कृतीकरण को बढ़ावा देने एवं

उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देने वाले साधनों के रूप में संचार माध्यम को क्रमशः 15 एवं 13 प्रतिशत उत्तरदाता ने स्वीकार किया है। इससे यह स्पष्ट है कि आज के दौर में संचार माध्यमों को जन जागरूकता का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सशक्त साधन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। लेकिन इसने संस्कृतीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य भी किया है।

प्रत्येक समाज एवं समुदाय की कुछ समान एवं कुछ भिन्न धार्मिक मान्यताएं होती हैं। यह मान्यताएं उसे अन्य समुदाय से अलग एक विशिष्ट पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार के प्रावधान में उसकी भौगोलिक स्थिति एवं जीवनशैली का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह प्रक्रिया प्रकृति का शाश्वत नियम है और यही कारण है कि यह मानव सभ्यता के आरंभिक काल से आज तक के आधुनिक समुदायों में समान रूप से किसी न किसी स्वरूप में दिखायी पड़ता है। यदि हम थारू जनजाति की बात करें तो इस समुदाय में भी यह नियम देखने को मिलता है। यह समुदाय मूल रूप से हिन्दू समाज में प्रचलित धार्मिक कृत्यों को अपनाते हैं लेकिन इनमें कुछ परिवार इसाई धर्म को भी मानते हैं। इन समुदाय के व्रत एवं त्योहार तथा विचारधाराएं हिन्दू धर्म के अनुसार मनाए जाते हैं लेकिन इनमें भी कुछ भिन्नता देखने को मिलती है। इनकी लोकगीत एवं धार्मिक पूजन प्रविधि इसकी सामुदायिक भिन्नता को प्रदर्शित करती है। बदलते समय के साथ आज इनकी इस पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर में भारी व्यापक बदलाव आ रहा है। इसका एक बड़ा कारण है इस समुदाय के लोगों का अन्य संस्कृतियों के सम्पर्क में आना तथा उसमें बढ़ती संस्कृतिकरण की प्रक्रिया। कुछ समय पूर्व तक की बात करें तो न तो इन क्षेत्रों में आवागमन की इतनी सुविधा थी और न ही इतना अधिक उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव। आज सूचना सम्प्रेषण के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी उपकरणों के बढ़ते प्रभाव के कारण उपभोक्तावादी संस्कृति का बोलबाला अपने चरम पर है। आज हम उन तथ्यों से रू–ब–रू हो रहे हैं जो कुछ समय पूर्व तक अकल्पनीय था।

धार्मिक कृत्यों के किसी भी समाज या समुदाय के लिए महत्व तथा इसके स्वरूप एवं अस्तित्व पर आधुनिक संचार माध्यमों के पड़ते प्रभाव के कारण ही प्रस्तुत अध्ययन के दौरान यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या आधुनिक संचार माध्यमों ने धार्मिक मान्यताओं को प्रभावित किया है? तथा इस संदर्भ में संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण सारणी संख्या 03 में किया गया है–

सारणी संख्या 03

"क्या आधुनिक संचार माध्यमों ने धार्मिक मान्यताओं को प्रभावित किया है?" के प्रति उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हां	70	70
नहीं	05	05
तटस्थ	25	25
कुल	100	100

चार्ट संख्या 03

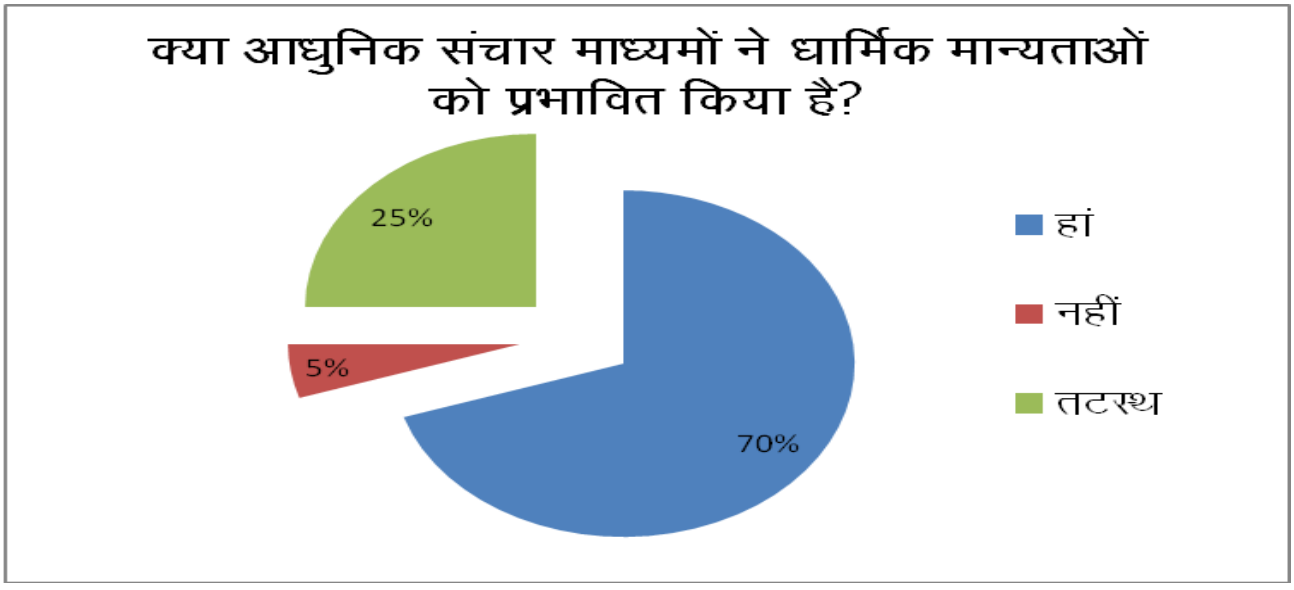

सारणी संख्या 03 के वर्गीकरण एवं विष्लेशण से स्पश्ट है कि संचार माध्यमों ने समाज के अन्य क्षेत्रों के समान ही समाज के धार्मिक मान्यताओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज थारू समाज में लोकगीत गायन में घटती रूचि की बात हो या वैवाहिक पद्धति में दिखती आधुनिकता की झलक की बात हो इन सबके लिए कहीं न कहीं संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आर्थिक क्रियाकलाप किसी समुदाय ही नहीं बल्कि किसी राश्ट्र के विकास के लिए भी बेहद आवष्यक क्रियाकलापों में से एक है। आज आधुनिकता एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था ने लोगों को पारंपरिक व्यवसाय से इतर अपनी योग्यता एवं कार्यकुषलता के आधार पर व्यवसाय की स्वतंत्रता प्रदान की है। इस व्यवस्था ने लोगों को अपने परिवार एवं समाज के विकास में भूमिका निभाने का अवसर प्रदान किया है। आज समाज में ष्वेतवसन अपराध की बात हो या भ्रश्टाचार की बात, सबके पीछे का मूल कारण समाज की बदलती आर्थिक महत्वाकांक्षा ही है। एक समय था जब समाज में आर्थिक स्थिति को समाज में चरित्र एवं स्वास्थ्य से निम्न महत्व प्रदान किया गया था लेकिन आज यह समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक बन चुका है। आज यह किसी व्यक्ति के सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण का प्रमुख कारक माना जाता है। इनके इसी महत्व के कारण प्रस्तुत अध्ययन के दौरान यह जानने का प्रयास किया है कि संचार माध्यमों ने इस समुदाय के पारंपरिक आर्थिक क्रियाकलाप को किस हद तक प्रभावित किया है तथा इस संदर्भ में प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण एवं सारणीयन सारणी संख्या 04 में किया गया है–

सारणी संख्या 04

बदलते संचार माध्यमों ने पारंपरिक आर्थिक क्रियाकलापों में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है" के संदर्भ में उत्तरदाताओं की मनोवृति

मनोवृति	उत्तरदाता	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	40	40
सहमत	35	35
तटस्थ	03	03
असहमत	12	12
पूर्णतः असहमत	10	10
कुल	100	100

चार्ट संख्या 04

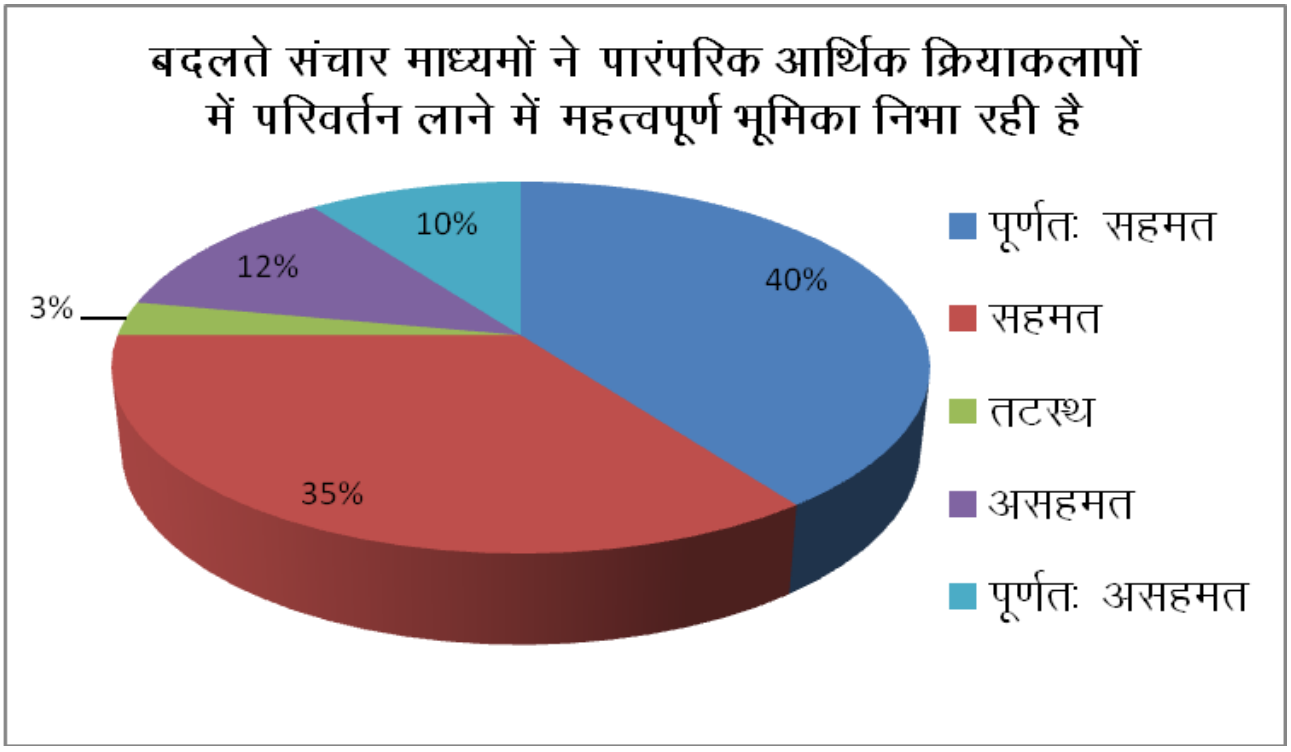

सारणी संख्या 04 के वर्गीकरण से स्पष्ट है कि बदलते संचार माध्यमों ने थारू समुदाय की पारंपरिक आर्थिक क्रियाकलाप में बदलाव लाने का कार्य किया है। ये और बात है कि इस समुदाय के अधिकांश लोग आज भी मुख्य रूप से बदलते स्वरूप के साथ अपने पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े हैं। बावजूद इसके ये लोग पूरी तरह से इस बात से सहमत हैं कि संचार माध्यम ने इनकी पारंपरिक पेशे को प्रभावित किया है।

६ निष्कर्ष :

संचार माध्यम आज के समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है। आज मनोरंजन की बात हो या जनजागरूकता की हर क्षेत्र में संचार माध्यमों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। प्रस्तुत शोध पत्र संचार माध्यमों की इन्हीं विशेषता को केन्द्र में रखकर इनके प्रभाव का आकलन थारू जनजाति पर करने के उद्देश्य से किया गया है। यह अध्ययन उत्तराखण्ड के सिडकुल के निकट निवासरत थारू जनजाति पर केन्दित है। इसके लिए संबंधित समुदाय से जुड़े परिवारों से संपर्क कर उनकी संस्कृतिक स्थितियों यथा उनकी परंपराएं, रहन–सहन, आजीविका, संरक्षण एवं संवर्द्धन में हो रहे परिवर्तन पर संचार माध्यम के प्रभाव का अध्ययन एवं अवलोकन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि संचार माध्यमों ने न केवल इस समुदाय के खान–पान एवं रहन–सहन को प्रभावित किया है। बल्कि इसके बढ़ते प्रभाव ने इस समुदाय में संस्कृतीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढ़ावा दिया है। इससे एक ओर जहां राष्ट्रीय विकास को गति मिली है वहीं इसने समाज को गैर सामाजिक कृत्यों की ओर भी आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने समाज में धार्मिक रीति रिवाजों एवं मनोरंजन के साधनों में भी बदलाव लाने का कार्य किया है।

संदर्भ सूची :

1. प्रसाद, डॉ. शारदा, थारू जनजाति : जीवन और संस्कृति, अभिदा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, 2018
2. सिंह, नूतन एण्ड धीरेन्द्र कुमार सिंह, थारू एण्ड देअर इनहेंसमेंट इन मॉर्डन टाइम ऑफ लखीमपुर खीरी, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव सोशल साइंस एण्ड ह्यूमेनिटीज रिसर्च, 2015
3. भार्गव, नरेश, वैश्वीकरण : समाजशास्त्रीश परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2014
4. वर्मा, सुभाष चंद्र, द स्ट्रगलिंग थारू यूथ : ए स्टडी ऑफ द थारू ट्राइब्स ऑफ इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एण्ड एन्थ्रोपोलॉजी, 2011
5. जोशी, योगेश चन्द्र, थारू जनजाति : एक अध्ययन, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1990
6. श्रीनिवास, एम. एन., सोशल चेंज इन मॉर्डन इंडिया, ओरियन्टल लॉगमेन पब्लिकेशन, दिल्ली, 1977
7. Verma, Subhash Chandra, The Eco-friendly Tharu Tribe : A Study in Socio-cultural Dynamics, Kumaun University, Nainital, 2010
8. www.uk.gov.in
9. www.usnagaruk.gov.in
10. www.wikipedia.org/wiki/tharu_people